

॥ श्रीः ॥ Hindi Section

Library No. 845

रुक्मिणीहरण नाटक ।

जयपुरनिवासीमथुरादासनिर्मित ।

जिसमें ।

बड़े बड़े शूरवीर दैत्यराजोंके मध्यसे श्रीरुक्मिणीका
लीलापूर्वक हरणकर लीलाविग्रहधारी व्रज-
विहारीजीका उनसे परिणय करना
: नाटकको छठवें वर्णित है ।

उसीको ।

खेमराज-श्रीकृष्णदासने
बंवाई

नज " श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७४, शके १८३९.

अथवा पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार राजनियमानुसार
प्रकाशकने स्वाधीन रक्खा है.